

© लक्ष्मीनारायण रणा

मूल्य-पैतृस रूपया

प्रथम संस्करण : 1985

सावरण : डॉ० प्रेमचन्द्र गोस्वामी

प्रकाशक : सुपमा-प्रकाशन,

नत्सुसर गेट के बाहर, बीकानेर 334 001

मुद्रक : साधना प्रिंटर्स, बीकानेर

SAWAN-FAGAN'(Rajasthani Poetry)

Laxmi Naryan Ranga

मायङ्ग भोम, माँ अर मायङ्ग भाषा-भाव, रस अर चिन्तण री तिरवेणी । आ तिरवेणी जद मन, बुद्धि अर रसना रै कवळा-चीकणा मख्यळां रै कण-कण नै रस, रंग, रूप सू तरातर सीच'र सै सीवा-काकड़ा लाध ऐकमेक हुय बेवै तद "सावण-फागण" रो ससार रचीजै रसीजै-रगीजै, तद शिल्प अर कथ्य रै अभीण मोत्या चीक पूरीजै-सोनधाळ बाजै-केसर-कू कूं बरसै कस्तूरी महकै.....

-रंगा



प्रकाशकीयं

आप कोई पोथी पढो अर पढते पढ़ते आप लिखार सूं बायेडो माडण री धारो, उणनं घणं हेज सू अन्तस रै नैडो सहेजणो चावो, एक हलचल माचं आपरै पाठक, समीक्षक अर रचनाकार रै न्यारे न्यारे स्तरां पर तो उण पोथी रौ जनम सारथक वजे ।

आज रै इण हवाई समै मे मची थकी भागमभाग में भी आदमी टेम काढ'र जे 'सावण-फागण' जैडी रगी चंगी व्यग्य-विचार री कोई पोथी पढणी चावै है—इण सोच विचार पाण पोथी प्रकाशन री मत्तो करघो, पोथी री मनोरथ सर्पौ ।

कविता कोरमकोर नी मनोरजन है नी प्रयोग नाम धारी कोई चम-त्कारी चौळको—ना फेशन ना हॉबी ना 'शे मेन शिप'—कवि श्री लक्ष्मी-नारायण रंगा खातर कविता है एक संवाद, मिनख सूं मिनख ताई एक मवादी मवेदना—आत्म चेतना ।

भेळा बैठर कवा को गिणीजनी । पण स्वाद आप आपरी न्यारो । गीता, गजला, नान्ही कवितावा (बीजिकावा) चितरामा अर व्यग्य विचार सैपूर कवितावा, काणिया अर नाटकां रा कलमघणी श्री रमाजी अर उणारं पाठकां रै बीच में पड़ं पण कुण ?

'सावण-फागण' पोथी रा चार चरण । गजल खड रा पारखी है डॉ० मदन केवलिया । बीजिका रा ओकारथ्री । चितराम रा डॉ० प्रेमचंद गोस्वामी अर कविता रा डॉ० नरेन्द्र भानावत । चार पारखी—एक कवि । असंख्य अनाम पाठक । ठंडी, लिजलिजी अर बैसके पडियोडी सी 'मया-स्थिति' री भाटा-बरफ भंजं पीधलै—आ मंसा है ।

आस—उमीद है, राजस्थानी जगत इण पोथी नै हेता हेजा अपणास देसी—

भरोखो

गजल	9
बीजिकावां	27
चितराम	47
कविता	73

परख

गजल	-डॉ० मदन केवलिया
बीजिकावा	-श्री ओकार श्री
चितराम	-डॉ० प्रेमचन्द्र गोस्वामी
कविता	-डॉ० नरेन्द्र भानावत

जुगबोध गजळीं

श्री लक्ष्मीनारायण रंगा राजस्थानी रा घणा चावा साहित्यकार है ।
उणा जीवत अर जगत नं खुली दीठ सूं संपूर सचेत संवेदना समेत सहेजी
है, सबद-सबद निरखी-परखी है । जीवन री पाणी उतरधां फेर बचें कई ।
गजळकार श्रीरंगा री एक बानगी-

उतर रियो हर चीज री पाणी

काई नी बची अब ओळखाणी

मिनख री ओळखाण री तलास गजळ दर गजळ श्री रंगा करी हे-
'सावण फागण' काव्य संग्रह में । जिनगाणी री संत्रास भोगें है- आज
आखी जमारो

फैलरियो है जंर अब सांस-सांस में

पाळया पीवणा-सांप क अब केवां कंनै ?

किणनं केवां पीडा ! ओ सारथक सवाल गजललार री काव्य-मात्रा
रो तीख भरघो सुर है-

आदमी कित्तं रंगा मे रंग्यो हुयो है

ईसा तो अजं सूळी पै टंग्यो हुयो है

अन्तरिक्ष पोच र ग्यान गरीबीजियोडे, इण जुग पर किसोक गैरो
व्यंग्य है-

काळीदास हर जुग मे लेता रैया जलम

घरती-डाळ एटम सू काटे है आदमी ।

पश्य

गजळकार श्री रंगा कने आपरी निजोनिजी पीड सिरजी 'गजलां में
आदमी री असल टीस, घणं उफाण सूं उभरी है-

बीती आखी ऊमर तने याद करतां करतां

धुंघळागी निजरां धारी उडीक करता करता ।

कवि आदमी । आदमी री ओळयूं अर ओळ ! जुगांजुग सूं बी-एक
अणंत उडीक लिया हिवडें रं हेत नं पाळें !

अंग्रेज कवि 'कॉलरिज' सटीक कैयग्यो है क' महान कवि महान
दासैनिक भी हुवें । म्हारो आलोच्य गजलकार महानता री दीड भाग सूं दूरो,
पण इण असार संसार रो पूरो जाणकार है-

म्है तो पाणी रा आखर हां मिट जास्यां

म्है तो बाळू री लेंरां हां, मिट जास्यां

पाणी रो आखर आदमी/नस्वर/बाळूरी लेंरां रूप आदमी आज है
काल नी । पण पाणी री टीम मांडणियो कवि मर मरनें अमर हुवें ।
श्री रंगा आपरें कश्य, आपरें सम्प्रेषण अर संवेदन रो एक माघो सजक है ।

डाँ० मदन केवलिया

वेच्या हाथ वाजार के अबे केवां केने,
माथा किया नीलाम के अबे केवां केने.

फैल रियो है जै'र अबे सास-सांस मे,
पाळघा पीवणां साप के अबे केवां केने

धोळा चोळा पर लुकाव काळी देही,
बस अठे किरकाट के अबे केवां केने.

मन घणो उदास तन सजियो-धजियो,
पौसाकी हुयो संसार के अबे केवां केने

बैचा घरम-ईमान के बैचां देस ने,
घर बण्यो मसाण के अबे केवां केने.

कठपुतळया रो देस हुवे अठे खेल अजूबा,
दी डोर दूजां र हाथ के अबे केवां केने.

फोडा घणी वात, के ऊंचा भापण देवां
उळभिघोडा खुद आप के अबे केवां केने

मिन्दर मस्जिद भांग, जळावा गुरुद्वारा
जपां राम रो नाम के अबे केवां केने.

पोथ्या भणी इण भांत के 'आपो' भूत्या,
विगडघो घाण रो घाण के अबे केवां केने

ऊचा घणा मकान, मिनख वावनियो हुयो,
गुण पोच्या पताळ के अबे केवां केने.

म्है तो पाणी रा भायर हां मिट जासां
म्है तो बाळू री लै'रा हां मिट जानां.

अकाम गरीबी री अगन सूं जळतो पानो
दुख-वादळ रा दसायत हां मिट जामा.

सेजडी री सागरी ज्यूं चुटे आ जिन्दगी
सांसां रा मूवा घोसा हां खिर जासा.

जीवण रै जंगळ भटके तिरमा मिरगला
आसा-दरपण रा चै'रा हां मिट जासा.

बिन रोटी रै तबे दाई जळ री जिन्दगी
भूखी भीता रा छापा हां मिट जासां.

लू रै लपरका दाई गुजर री आ जिन्दगी
सांसा-सतरंज रा मोहरां हां पिट जासां.

तीखा कांटा मू बिघ्यो वाग रो हूँ हूँ
फूला रै सोई रा छाटा हा मिट जासा

जन-जीवण बण्यो राजनीति री चौपड
वोटां बिक्योडी गोटघां हां पिट जासां.

□

समं री चोट जिको सैवं है आदमी
सही साची बात कैवं है आदमी.

रिस्ता नाता सगळा काचें काच री पडता
किसी जमी माथे पग टिकावें है आदमी

हरियाळी मंजळ्यां रा सपना लिया आंख्यां
पीळें पत्तें रो जीवण वितावें है आदमी

बिस्वास आस्थावा सें तार तार हुयग्यां
कठें कठें कारचा लगावें है आदमी.

पर्यावरण री सांसां रेडियोधर्मी घूड
ब्लडकैसर रो जीवण जीवं है आदमी.

सै दिसावा पै'री अन्व्यारी पोसाकां
किण अकास पै सूरज उगावें है आदमी.

पारदर्शी भीता बो स्वारथ री रचें
एकयूरियम री जिन्दगी जीवं है आदमी.

खिडक्या रें फ्रेमां हर आंख अठें है कंद
सही साचो रूप किया जाणें है आदमी

सर्वाधिकार तो बेच्या सै दूजां रें हाथा
अनुग्रह री जिन्दगी वितावें है आदमी.



बीती आखी ऊमर तने याद करतां करतां
घुघळागी निजरां धारी उडीक करतां करतां.

हर वादळ रे साथे म्है वहाया आम्हू इत्ता
सावण भी सूख्या साथे आम्हू भरतां भरता

तने दूढणे रे खातर म्है किया सफर इत्ता
दिन-रात भी थक गया म्हारे साथ चलतां चलतां.

धारी याद री अगन मे म्है जळायो मन इत्तो
चान्द-सूरज पड्या फीका म्हारे साथ जळतां जळता
हर जिन्दगी मे मिलमा ओ कवल हो धारो
वयो हुयग्या जुदा थे म्हारे साथे चलतां चलता

जुगा जुगां सू पैछाणे ए प्यार करणवाळा
क्यो हुयग्या अणजाण थे पैछाण करतां करतां.

हर जीवण वणे प्यार प्रेम इत्तो सोरो कोनी
मुस्कल सू मिले प्यार काँई धार मरता मरतां

हर पाव वणे मुकाम ओ जरूरी तो कोनी
मिले प्यार री मंजल काँई जीवण चळतां चलतां.

वस इत्ते से ई दर्द सू थू तडक उठयो मन
ए प्यार रा है धाव, ए भरसी भरतां भरता.

धारी बदनामी रे डरसू न लियो नाम धारो
म्हारे होठां आयग्यो धारो नाम मरतां मरतां.

हर सास पर सदा म्है लियो है नाम धारो
म्हारे दम भी निकळसी धने याद करतां करता.

□

ओ दिन घणों अन्घेरो है
हर रोसणी पर पैरो है.

मंथण कर इमरत लाया
काळा नागा रो घेरो है

ऊंची मेड़ी ऊग्यो सूरज
गळघां रो भाग अन्घेरो है.

वसन्त मे पेड नागा-भूखा
ई जमी रो दुख गैरो है.

जमी-आकडा फसला ऊगै
खेत भूखां रो डेरो है.

मिनख गमादी सं पेंछांण
मुखीटो ही अब चंरो है

हर अवाज वणगी चीखां
कान जमीन रो बहरो है.

गाव-गांव वस्त्या बळे
किण री ओ पगफेरो है.



आदमी कित्त रंगां मे रग्यो हुयो है
ईसा तो अजै सूळी पे टंग्यो हुयो है.

चान्द मंगळ भायै बसर्ण री योजनावां
धरती भायै फेरुं मजहबी दंगो हुयो है.

अहिंसा री धरती पे ऐ ऐटमी फसलां
भारत री गांधी फेरुं नागो हुयो है.

पर्यावरण नै हाथां जैर पा रियां हां
हेमलोक पीपर कद मुकरात चगो हुयो है.

सम्यता-संस्कृति नै सवारण री दावो
आदमी है कं थोड़ो और बेढगो हुयो है.

ऊजळी खोळा पर काळा अजगर धूमै
जन-सेवा मांस री धंधो हुयो है.

ग्यान री सीढियां चढ़रियो है जितो
आदमी बितो ई चितबंगो हुयो है.

धरती नै सुरग वणार्ण रा सुपना
प्रकृति री आंचळ बदरंगो हुयो है.

□

चीफेर घिरी ऊषी दीवारा
कूण तोहं काली मीनारा.

मगळें नागर काई छाई
काई हुयसी काकरी मारघा.

आदमसोर ओ जुग बण्यो
अठे मास रा सें विणजारा.

सोने खातर वळें सीताया
काई करे जनक दुसियारा.

मिनस जे'र रो बण्यो सीदागर
डरता फिरें माप विचारा.

गूगी वस्ती है बोळा लोग
कुण मुणं दुग भरी पुकारा.

जीवता मिनस तो मरें भूया
भोग ल्गावें देवता मारा.

मिनस गांप री पं'री काचळी
नागा हुया सें नाग विचारा

□

दुख सू गुजरी रात सारी
यूं ई बीतरी जिन्दगाणी.

घरती तिरसी रई तरसती
कदं न बरसी बून्द पाणी.

चैन-चून्दही कदं न ओढी
मूं पीड़ री हूं पटराणी.

मीठी मुळक रची ना होठा
आसू जीवण री सैनाणी.

कठं न मिल्यो सुख-सुआगत
करं दुख मगळे मिजमानी

मन रो मैल सूनो सिसकं
सुख री हूं दुवागण राणी

दुख री जमी, जळण-अकास
जीवण कुळण है आ जाणी.

सुख सू रिस्ता नी निम्मा
दुख सू है पैछाण पुराणी.



हर किरण कर लियो अधियारां सूं करार
अबै किण सूरज पर एतवार करां.

हर कलम ई विकगी जदं नरक-बद
अबै किण कलाम पर नरक-बद

हर घरम बणग्यो राजनीति अठै
अबै किण मसीहा पर एतवार करां.

हर रिस्ता धामी कदौ नै नरक-बद
अबै किण दोस्टी पर नरक-बद

हर भीत री नीव खड़ी है थोप न
अबै किण छत पर एतवार करां.

हर पग नै कदौ नरक-बद
अबै किण कदौ पर नरक-बद

सं जीभां पे लागी रादा नै नरक-बद
अबै किण अवाज पर नरक-बद

हर कदौ नरक-बद
अबै किण नरक-बद

फिल्ला रंग अर रूप बदळै है आदमी
किरकाट नै भी लारै छोडै है आदमी.

ले राजघाट री सोगन, सान्तिवन में संकळप
सघै जे स्वारथ दळ बदळै है आदमी.

असलियत कांई नी बस पडत ई पडत
कादां री फसला निजर आवै है आदमी.

सत्ता पावण नै तो घणां लटूरिया करै
मिल जावै चोट, चोट मारै है आदमी.

काळीदास हर जुग लेता रैया है जलम
घरती-डाळ एटम सू काटै है आदमी

ईस्वर अक घरती ई, सूपी ही मां सी
टुकड़े पे टुकड़ा उणनै बाटे है आदमी.



अकास धुंधलायोडो है
आदमी उफतायोडो है.

भागै सगळी ओळखाण
आदमी सतायोडो है.

मूढं माथं मुळक रची है
आसूंडा लुकायोडो है.

विम्ब सै बिखर रिया
दरपण तिडकायोडो है.

गुलाब विस कांटा बणै
आदमी रो लगायोडो है.

सुख रो सूरज तड़फड़ावै
सूळी पर चढायोडो है.

मन रा ताळा ना खुलै
कूची गुमायोडो है.

होठां माथै खीरा उछळै
पेट रो भड़कायोडो है.



उतर रियो हर चीज रो पाणी
काई न बची अब ओळखाणी.

कोयला सैग मकराणा बणग्या
काळै-धोळै री नी पँछाणी.

ऊचां मैला लई सिघासण
करै जनता री कुण निगराणी.

सँ निजारा दिखँ घूँघळा
आख्या चांदी पाट्या-ताणी.

मिलै न्याव नँ फांसी हुकम
कलम इन्याव चालै तूफाणी.

आंधो इतिहास साहित्य गूगो
बोळै जुगरी आ संनाणी.

होठा ठुकी सोने री मेला
कुण कँबँ दुखां री काणी.

जिका बिकया बजारां बिचाळै
बोल सकै कठै वा मे पाणी.



वसुधैव कुटुम्बकम् पण कोई नी आपारो
घरती रा हा जाया पण घर नी आपारो.

अब सुतन्तर हां आपां ओ स्वराज आपारो
पण हर तन्त्र पर सूं उठगियो पतियारो

अहिंसा परमो धर्मः ओ सिद्धान्त आपारो
आग, डकैती, हत्या, बलात्कार रो निजारो.

हायां रंगीन टी. वी आंख्यां उपग्रह प्यारो
भूय री अगन मे जळें आदमी विचारो

अे न्याय रा तराजू, आयोगा री रपटां
ग्रहट चक्रव्यू री नी टूटगियो किनारो.

बहलासी कद ताई, ओ चान्द रो खिलौणो
बिना दूध मरै, जद आख रो ई तारो.

अे सुस्त सुस्त भवरा, अे मरी मरी तितळघा
कद दिखा पासो ए वसन्त रो निजारो.

योजनावा पंचवर्षी, ओ बीस सूत्री नारो
उम्मीद मे ही मरगयो ओ जमानो विचारो



अन्धारी नगरी में आंधा बरम है लोग
खुली आंखियां लियां अठं सोवं है लोग.

हाथा मे मसालां जत्या रा जत्या
दिन रा उजाळा गुम जावं है लोग.

आवणिया दिनां रा ले भीठा सुपनां
वाजीगरां सूं सदा ठगीजं है लोग.

जड़ांमूल खाणै री, मनसा लियां मनां
मूंदें पे अपणायत दिखावं है लोग.

ऊपर सूं रंगमै'ल सी चमक-दमक लियां
मांय मांय तरेड़ा, सी पावं है लोग.

मकड़ी रै तन्तर मे जाळा ई जाळा
तन-मन सूं फांस्या, तडफड़ावं है लोग.

□

मिनख जूण
रोटी रोटी,

काळी-धोळी
गोटी गोटी.

आसू धार
मोटी मोटी.

दुख ढोव
रोती रोती

चूक करज
कोडी कोडी

विके मजूरी
बोटी बोटी

जीवण घाणी
जोती जोती

जीवं जिदगी
छोटी छोटी

दुख जमीन
मोटी मोटी.

आसू बीज
बोती बोती.

कांटा फसलां
ढोती ढोती.

मूळ घन है
खोती खोती

मिनख नईं है
टोळी टोळी.

सांस विके
भोळी भोळी.

जिदगी बस
खोळी खोळी.

कान बेच्यां
बोळी बोळी.

□

जिन्दगी नारेळ री जोटी बणी
गिरी गिरी देवतां रँ भोग चढी.

जिन्दगी तावडे में भीत लडी
छांया छांयां सँ सिघासणां पडी.

जिन्दगी काळजँ री फालो बणी
मुळक मुळक पइसँ रँ होठां चढी.

जिन्दगी मरुयल मे छांट पडी
कू कू बिरखा दूजां रँ आंगणँ पडी.

जिन्दगी दुखा री अणखिली कळी
सौरम सौरम ऊंचा मँलां चढी.

जिन्दगी लीर लीर गूदडी बणी
गीदया गीदयां ऊंची खुरस्यां चढी.

जिन्दगी आसावां री लाम्बी लडी
मोती-भाळा मालकां रँ गळे पडी.

जिन्दगी रिगसती पगयळी बणी
मजळां मजळा सँ ताळा वन्द पडी.

□

मिनख बधतो जारियो है
मानखो घटतो जारियो है.

जित्ती ऊंची चढे रूख ओ
जड़ा छोडतो जारियो है.

जित्ती तेज हुवे रोसभ्या
अन्धारो पसरतो जारियो है

संडकां रे जंजाल बिचाळें
नगर उल्लभतो जारियो है

दे'रे मिनख घणी पौसाना
नागो हुवतो जारियो है

डण अन्ध्यारे सहर माय
सुरज भटकतो जारियो है.

ऊंचा सुरा मे गावे गीन
ओ रोवणो लुकारियो है

होठां मू मे साधे रिस्ता
मन सू टूटतो जारियो है

पमरे काई पडतां पडतां
सरोवर मडनो जारियो है.

फले चोफेर टीढी-फाको
ओ भेत खजतो जारियो है.

सुतन्तरता री दुकान सू
नुई मांकळा भडवा रियो है.

हथियाग री बिकरी खातर
देमा न लडवा रियो है.

□

राम राज में तावड़ो ई छाँया है
अठै सब पडसँ री माया है.

भैरूजी घणा मारै मजा
भोपा दुख सताया है.

साच चढ़ै सूळी माथै
झूठ रा राज सवामा है.

भाटा बोल देवै परचा
मिनस लगाम लगाया है.

सोने माथै काट चढ्धो
पीतळ झोल चढाया है.

गंगाजळ मूं न्हावै गधा
आदम मरै तिसाया है.

वारै सू आजाद दिवा
ऊमर कँद भोगाया है.

जा नै माथै ऊच्या फिरां
खाडा बाही खुदाया है.

दास जनम्या दास मरिया
आजादी फळ चखाया है.



एक सांवठी छीड़ मांयली छिब

'बीजिका' नांव सटीक । कविता री अणिमास री अहसास ! बीजिका-एक सबदबोध ! सबदाखंरा रें आरपार होवै कवि । प्रकृति री गति, स्थिति अर कृति-मति री सौ ग्यान-उकरास जद बाँ 'शब्दाणु' विस्फोट सरूप करै तो आखर आखर अपार पण सरब सुलभ सहज सरजणा री घणियाप धारै ।

इण कूंत पेटे मरुघर मोभी कवि श्री लक्ष्मीनारायण रंगा री बीजिकावा पासी निजराळं तो मनै लागे क' अठे जावती कविता भीड़ मूं परवार हुयर इण जीवन-जगत री छिब, एक सावठी छीड़ में उकेरै ।

एक ही शब्द मे सो कई । चार पाच री जोड़ अगाडी सबद हाकावाज. हुंवता दीसै । की रंगा-रगत देखो विन्दु मे सिन्धु रूप-जिन्दगी/खारे पाणी री भील/मौत/काचो काच/ईमान/किगए री होडिंग/पंछाण/स्टीकर जठे चावो चेपो/घरम/गोला बान्दरां रें हायां चक्कू/दहेज/समठूणी री तेवड़ मे घासलेट री डब्बो/महानगर/गंस प्रदूषण रा प्लान्ट/इज्जत/गळियोडी फीसती घोती/नौकरी/सांसां री अडाणगत/विधवा/विना हत्ये री घट्टी/वासना/खालियो/दिन/ईनाम बायरो लौटरी री टिकट/जस/बरतण खुदियोडो नांव/हेत/राचणी मेहदी/भगवान/हुवा कठे कोनी ।

पदश्व

अणुवंती कविता खातर की कंणो न सुणणो । मायलो मरम-नान्ही कवितावां री भरघो तरघो जमारो । जे दो आखर री सांवट नी सभळें तो पाठक ताई कविता याने मंस ताई भागीत ।

श्री रगा कने सबद-संगत है । सबदा रें इयं-भाइपें मे कवि री राजस्थानी काव्य यात्रा री आयाम मनै उजासवंत लागै । 'सावण फागण'-काव्य संग्रह री आ बीजिकावां मे एक बीजिका ही जे लोक रें चित चढ़गी तो कवि कृतिघन्य हो जासी ।

***'समठूणी री तेवड़ मे घासलेट री डब्बो'-दायजे री ओ पीड़ भरघो सध्वोधन-ममाज-क्रान्ति री महाकाव्य है ! आ लंण श्री रगा री ही कलम लिख सकै । आ ही सगती । ओ ही सण । आ ही जुग-टीस । कवि री यात्रा बधासी । ओ पतियारो है ।

जीवण
तार माथें
झरूं-झरूं

बून्द.

मिरतू
झणकार करतो
दूटियोडो
तार

जीवण-मिरतू
ट्यूब लाइट करे
"जग बुझ
बुझ जग
जग बुझ"
"बुझ"

बाळ मौत

आंगणें बरसी
नान्ही सी

छांट भर
सूखगी.

जवान मौत

खूब बधियोडी
गुडका खावती
किन्नी,

तेज हवा सू
खूसगी
हाथा मांय सू.

जीवण

जुगां सूं
अगन-तिरस
लुकायोडो

मरुयळ.

मौत

काचो

काच.

जिन्दगी

रीफिल

जिन्दगी

खारे पाणी री

भील.

फूट

जठं

सेरी हुयसी

पाणी

बठई

मरसी.

कळह

तेज तावडें सूं

फाट जाय

आगणें री

सिरमट भी.

पाप

खाडो खुद

मैलें सूं भरें

दूजा पर भी

कादो उछाळें.

ईमान

किराये रो

होडिग.

न्याव

सोने री

ताकड़ी.

पैछाण

स्टीकर

जठे चावो

चेपो.

शिक्षा

“बोल पट्ट
सीताराम”.

आज रो ग्यान

परदेस्यां रं

मूढा रा

ऐंठा

कया.

धरम

गैला बान्दरां रं

हाथां

चक्कू.

दहेज

समठूणी री तेवड मे

घासलेट रो

डब्बो.

नुई संस्कृति

तुलसी धार्ण मे

थोर उगावणों.

परम्परावां

रंपर, रंपर

रंपर

किताब

कठई नई.

महानगर
गैस-प्रदूषण रा
प्लांट.

सुरक्षा
भांगण ई
कुओ.

इज्जत
गळियोडी
फीसती
घोती.

प्रगति

एक सडक
स्पीड ब्रेकर री.

विकास

स्टैन्ड माथे खड़ी
साईकल रा
पैडल भारणां.

प्रतियोगिता परीक्षा

काच री
भीतां माथे
पंजा
जमावणां.

नौकरी
सांसां री
अडाणगत.

मिनख
आगी माथं
चढ़ियोडो
बिना सेपटीवात्व रो
प्रेसर कूकर

लुगाई
सो रस कस काढ़
घाण,
कैकियोडी
चाय री पत्ती.

बिधवा

बिना हथं री
घट्टी.

बुढापौ

तळटी मे
आथमतौ

सूरज

जोवन

किरकट री

नुईं दड़ी.

कुंठा
मोखी रो
डाटो.

द्वटा रिस्ता
भीत सूं
उतरियोड़ा
लेवड़ा.

दुखी
सील खाईं
भीत.

काम

बाळू री

लैरां मे

पधकती

अगनी.

वासना

खाळियो.

अहं

शीत में' ल मांय

बळती

मैणबस्ती

श्राबादी
कीड़ी नगरो.

दिन
इनाम बायरो
लाटरी रो
टिकट.

भगवान
हवा कठ
कोनी ?

घरू रिस्ता

नगर मे

घर कम

होटल घणां.

पतियारो

घणां जतनां

सभाळयो

सिक्को

खोटो निकळ्यो.

करम फळ

बाप रे

नखा रा

भरूटिया.

यादां
कजळीजियोडा
खीरा.

जस
बरतण
खुदियोडो
नाम.

जवानी-बुढापो
ढाल चढणो
ढाल उतरणो.

हेत

राचणी

मेंदी

प्रेम

बिरखा मे

निकळसो

तो

भीज सो

साच-भूठ

काया

अर

छाया.

पाप
सरीर माथं
तो
मल चढसी.

सभ्यता
रं प र.

वांभुडी
बिन मोती री
सीपी.

परिवेश

जे आंगण

काळो हुसी

पगथळयां

मंली हुसी.

सामाजिकता

दूजे घर रो

धुंओ

पीवणों पडं

आपां नै.

वातावरणं

रेडियोधरमी

घूड.

खोड़ीलो

सड़क रो

खाडो.

कपूत

कुठोड़

पचियो.

मिनख

हाड-मांस रो

चितराम.

कलम री कमाल

रगा री "सावण-फांगण" पोथी में सबदी री भीणी-भांक अर
भांकी रो दरसाव 'चित्तराम' खड मे अखंड अर अमंग-रंगपूर !

चित्त दीठ चित्तराम चावं दीठ चावं चित्त कविता पढणियो नी,
भणणियो-गुणणियो चावं रस पूर पाठक !

सावण में फागण-फागण मे सावण एकोएक । गेरियो अकाश/वादळी
कड़ाव/पून री पिचकारघा रंग बरसै/घरती गणगोर/सावण मे सांतरी
होळी मची/सावण-फागण-एकाएक चित्तराम !

'ताळतळाया मे तिडकते आमै री दरपण ।' 'वादळ' मे अकास रै
जंगळ मे सावणी सेवण चरता सुसिया ! 'सूनो आकास'/मौसम रै मिजळें
छोरे हवारै बतरणं सू कोनी माडघो एक भी वादळी-आखर ! 'भड'/ओ
आभो है क किणी दुवागण री आख !

परश्व

'नान्ही छांटां री विम्ब रूपक श्री रंगा री कलम री कमाल देखो-
"सिरमट रै आंगणे मांय ए काली मिरचां कुण बिखैरी चौफेर !"

सावणियो घोबी ! अकासी पीजरो ! अकासियो अखबार । गोरबन्द !
भूमळ री मेडी-अे खाली-माली कवितावा रा चित्तरामी सीरसक ही नी है
अे है एक पूरा पाठा जीवता-जागता चित्तराम । बिरखा में घरती-अकास
अर आखी प्रकृति रा इसा रगीला, रसीला, रूपाळा अर सास्कृतिक
चित्तराम भारत अर विदेसां री दूजी भापावां मे देखण नै नी मिलें । ओ
रगा जी रो, आपरी निजू रचाण-बखाण रो तरीको है । आ राजस्थानी भापा
नै उणां री अनूठी देन मानीजसी । पैली बार प्रकृति रा सोवणा-मोवण
चित्तराम नुई नकोर शैली में रंगा जी री कलम सू रचीज्या है-अे आपरी
परम्परा घापसी-पतियारो है ।

डॉ० प्रेमचन्द गोस्वामी

सावण-फागण

रग रमण रै
चाव सूँ
गैरियो-अकास,
घोळ राख्या है
रंग-रंगीला
बादळी-कढाव,

पून री पिचकारघा सूँ
बौछारा री घारां सूँ
रंग बरसै
घरती गणगोर पर, र

रंग री राणी
घरती धिराणी
उडा री है
सतरंगी गुलाल
चारूँ पासी-क

सावण में
सांतरी होळी मची
रग-रम रूप रची.

रंग- पंचमी

अकास

खेल रियो है-

फाग

घरती साथे,

बरसा रियो है

रस-रंग री बोछाड़,

उढारियो है

रंग रगीली गुलाळ-र

इण रगपंचमी रै

कामण गारै

मौसम में

सरम डूबी

घरती

माधो झुकाया

भोजती जायरी है,

रगीजती जायरी है

रसीजती जायरी है

पसीजती जायरी है.

बादल

अकास रै
जंगल माय
सावण री सेवण

चररिया है
नान्हां नान्हां
धोळा-धोळा
सुसिया-कै

पून रै खड़के मूं
अचाण-चक
कठीनं भाजग्या,
कठई निजर नही आवं
दूर दूर . र दूर ...र
तक.

ताळ-तळायां

रात बीजळया
इसी कडकी-क

तिडकोड़े काच रा
टुकड़ा-टुकड़ा
किरचां-किरचा
दिगरगी
भरती मायं-

आमै री दरपण
तिडकग्यो,
रात
बादल
इसा गरज्या-कै

दिनूगं री
सोनल रोसणी मे
शल-मल, शल-मल
शल-मल.

सावण-कागण

सूनो अकास

अकास री पाटी

माये

मोसम रं मिजळें

छोरं -

हवा-रें बतरणं सूं

कोनी माण्ड्यो

एक भी

नादली-आखर-र

पाटी पडो हे

सफाचट.

साफ अकास

अकास

सावळ तरियां

भाङ्गियो-पूँछियो

स्याम पट

जिण पर

कठेंई,

कोई

चाक रो

निसाण तक

कोनी.

बादल वणिया

चितराम

आ

भकास रे

ऊंचे हिमाळे माये

आगे-आगे

जा री है

'सैणी' सुन्दरी

बरफ सी घुळती

अन्तस री आग सूं-

लारं लारं

उणने कुंदतो

जारियो है-

'बीजो',

बिजोग रा गीत

गांवतो-

गळतो-पिपळतो.

बादली-अकासियो

आ कुण

रंगभीनी-रसभीनी

भूमल,

महेन्द्रू री

उडीक मे

संजो राख्यो है

बादली-अकासियो-क

उण रे

सोनल-दिवळं रा

झपका-पळका पडे

सगळं अकास .

भूढ़

टप - टप-टप

टप - टप-टप

ओ

आभी है क

किणी दुवागण री

ओख ?

भूढ़

लागै - क

हुवावां करलियो

अपरण

बाळकिये-बादळ री

अर

आभी-घरत

वापडा

तरसे-झुरे

लमोलग.

नान्हीं नान्हीं

छांटां

सिरमट रं

आगणं मांय

ए

काळी मिरचा

कुण बिखेरी

चीफेर.

पेड़ां माथै बूदां

नानी मां री
काणी रा
मोत्यां रा हूँख
सांपडतेक

डाल - डाल
पत्ता- पत्ता
झळमळ-झळमळ करै
मोती.

सावणियो धोबी

सावणियो धोबी
बादळां रां गाभा घोर
अणनिचोया
टांग दिया
हवा रै तारां माथै-र
आला गाभा सूं
टपकरियो है पाणी
टप टप - टप टप
ट
प.

कळपती पत्त्यां

भायली-बादळी नें
कळपती-रोवती
देख 'र
बिरछ री पत्त्यां भी
रोवण लागगी,

बादळी तो
थक र थमगी,
पण पत्त्यां
आंसूंझा
ढळकांवती रई
घणी ताळ तांई .

बिरखा री रात

बिरखा री
रात,
काजळ रं
कूपळें मांय

दुवागण री
आंख रं
आसूं री
सजळ बून्द.

चौमासे री धरती

चौमासे री
धरती,

रंग रंगीली
चटाई .

बिरखा में मरुयळ

बणग्या

बाळू रा घोरा

सोने रा पाड,

उण माथें

बरमं

मोती री वीछाड,

नीचे

बंवें-

चांदी री घारा .

बिरखा री पून

बिरखा री

ठढी पून

जाणे

सोरें मन सूं
निकळियोडी
आसीस.

हरी घास पर बून्दां

इण
हरिये मुवटिये री
पासां
हीरा सजी,
चूंच
मोतीड़ा भरी .

अकासी-पींजरो

अकास रै
पीजरै मांय,
पून
कैद कर दिया—
रंग रंगीला
वादली-पंछीड़ा नै.

अकासियो अखबार

दूधिया
अकास मायै
उडतै पंछीड़ा री
लाम्बी-ओछी
टेढी-मेढी
कतारा.
जाणै
अखबार मांय
छपियोड़ी

गुई कविता.

अमर चूनड़ी

रंग रंगीळो

मावण

जाणं

गुरमी

अमर चूनडी .

किरणाळ वादळी

पून

लगा री है

अंगूरिया ओढणी रं

चारुं पन्डा

कनार

चमचमावती.

सावणी धरती

मावणी

धरती

मढियोडो

बढियोडो

गुरंगो चंग.

सावणी

जावता बादल

जा रियो है

होळै-होळै

ऊंठां री काफलो

घर मजल्या

घर कूंचा

अकाम रै मरुधळ मांय.

वीजळयां

ओ

मासळ रात नै

वादळा री ओट

कुण करे-

बेल्डिंग, कं

उण रा

पळका-भपका

सूण नी दै ?

तेज छाटा

मोगम री
कुचमादण

छांरो,
फेरगं
पून रा गघर
बादळां रं
छत्तं माथं-र
बून्दां री
सेन माग्यां
उडी-भिणकी.
भण-भण-भण-भण.

पाड़ा बैवती पाणी

ममनाळू
मां री
हरी काचळी-कुडती
घोर'र

हांचळां सू
बैवती
दूध री धारावा.

फुंवार र तारा

मोसम महाराणी
घुमा री है
अम्सीकळी री
घेर घुमेर
बादळी-घाघरो,

जिण रं
लूमते-झूमते
नाडे मे
जडियोडा
तारा-मोती,

कळी-कळी मे
टकियोडा
रग-रंगीला काच
करं
जगमग-जगमग.

फुंवारां बिचाळे

पून रा लैरका

बादळियो बापू
पैप चलावं
पून भायड
आंगण घोवं
भीर्ता-घर
डांगळो घोवं
सरडऽऽऽ, सरडऽऽऽ
सरडऽऽऽऽऽ.

हरिया बूँटा

सावणो

रंगरस पियोडी

सोनल घरती

माथे

हरिया हरिया बूँटा

जाणे

हरी-हरी डाळ्यां बेंठघा

पाखंडळ्यां

फडफडावता-

हरिया-हरिया

मुवटिया.

हरियाळी

अकास-

सूरज री

सोनल-रूपल

कलम मूँ-र

हरियाळी री

हरी स्याई मूँ

कर दिया

घरती रे कोरे

कागज माथे

दमखत

ठीड-ठीड.

पाड़ा माथें बादळ

पाड़ा नें
लाग गी
लू-

जणई
सावणी-राणी
समन्दर री
कटोरी मांय
भिजो-भिजोर
बादळी-रुई रा
फदां

उणरें माथें
लपावें-
उतारें

पाड़ा लूमता बादळ

बिजोगण
यक्षणी

भेज्यो
परेम-सनेसो

यक्ष नै,

जणें ई

बादळ

पाड़ा माथें

धुक-धुक आय

लुळ-लुळ जाय

बिजोगण रा

आंसूडा

वंचाय .

छांटा-छिड़को

आमं बंठी

काली कळायण री

लालर ओढियोड़ी

बूढकी विरला,

हवा रं हाथा

छाणं

बादळी-चाळणी-र

नान्हडिया छणं

छण-छण, छण-छण, छण-छण.

काळी-कळायण

काळा गाभा

पैर'र

काळा केस

बिसेर-र

आ कुण

पसरी पड़ी है

ऊ धे मू डै

कोप भवन मे

केकैयी .

बौछाड़ा

अकास सू
लटक रही है

वृन्दा री
रंगरंगीली
बानरमाळ

आडी-टेढी
लड़ालूम
शड़ा-झूम.

फूल गुलाबी

सूरज री
किरणां-

खिलादें
जगा जगा
बादला मे
गुलाब रा फूल'र
आभी हुयजावें
फूल गुलाबी.

श्रोक और मेघदूत

चौमासे रो कालीदास
रचरियो है
अकास रं
ताड़-पत्तर माथं,

पून री कलम सूं
बादळी छन्दां मे
एक और "मेघदूत".

मलजी मोर बोले रं

ऊजळी चारणी री
आतमा री कुळण ..
घुळगी

मोरा रं मन मे क-
पळपल
छिण-छिण
रटै-
मेहा आओऽऽऽऽ
मेहा आओऽऽऽऽ

रंग रंगीला वादळी

चितराम

ओ कुण

भोपो

अकास माथे

मांड राखी है

पावूजी री फड़-अर

उण

रंग रंगीला चितरामा रा

जसगीत

गारियो है

पून री टेर मे-

वीजळ्यां रा छमछमा'र

गरज री डोल

वजा वजा'र.

घुळ र बरातो दूजो वादळ

अकास माय

पंख पसारथा

उडतो जारियो है

अमर पछी,

अमर गीत गावतो-

जिकी

देखता-देखता ही

जळ-पिघळ जावं

सूरज री अमन सू-र

थोड़ी ताळ पछे

उण राख माय सू'

उडतो निजर भाव

दूजो अमर पंछी.

गोरबन्द

ओ सुरंगो बाभो है क-

इन्दर घनुस रै

सतरंगी साटण सूं

झारे समन्द री

बादली कोइयां सूं

बीजळयां रै

चिमकणा काचां मूं

किरणळ फुन्दां सूं

लडालूम

—गोरबन्द !

छोटी-छोटी छांटा

बादळियो बाळक नै

जगावण सारू

रात मासी

फैः रयी है

पाणी रा छाटा

रै रै रै ।

लोर

इण अकास री

रध-रोही में

ओ कुण भरं

दाकळ ?

कुण वावं

पून री

पातळी

कामडी ?

क'

धोळी घोळी

भेडा भाजं

दड़बड दड़बड.

कस

गरमी

कित्ती आकरी है क'

अकास रं

गाभा माथे

जमग्या है

पसीने रा स्याळ.

भाजता बादळ

रंग रंगीली
वादळी-तितल्यां
उड री है-

अकास रे
वाग-बगीचा मांय-र,

पून री गैली
छोरी-

भाज री है
लारं-आगं
तितल्यां पकडन नै.

भांत-भांत रा बादळ

चोमामं
आपरी
अममाणी दुकान मांय

खोल नाह्या है
रंग रंगीला
जाळीदार
कपडं रा
थान रा थान.

नीं बरसै

दूला

काईं ठा

काईं कै दियो-

बिरया नै-क

मूढो सूजायोडी

बैठी है-

न मुसकै

न मुळकै .

मूसळाधार

बादळ बैठी

बिरया-गोरडी

चलायै

धारावां रा

मूसळ

धमं धमं

धरती री

ऊंयळी मांय .

धरती-अकास-वादळ

धरती र

अकास,

सीपी रा

दो पाट-

उणा रं

बिचाळं

पळं

वादळी-मोती.

धोळो धोळो अकास

मीसम-महाराणी

करण ने

सावणी

सोळ्ह सिणगार,

उठायो

अकास-दरपण

पण

राणीजी रो

गरम गरम

हवाई-सांसूं सूं

जमगी

दरपण माथे

भाप.

सिद्ध्या रा

वादळ

सावण री
सोन चिडफली
गरनाटा भरें.

सिद्ध्या रे
अजाम माथें-र
लारें-लारें
उणरी
सोनल पांग्या
चिलकें
पमचम पमचम.

मूमल री मेड़ी
सावण री मरुषळ
रंगा री
सागर
घोरां घोरा
लहारां लहारां,
चिमकें
गतरंगी किरणां, र
मरुषळ बण जावें-
रगरंगीली,
काच जडियोड़ी-
मूमल री मेड़ी.

मिनखांचारै श्री वन्दना

श्री लक्ष्मीनारायण रंगा री कविता में तरै-तरै रा स्वाद अर अनुभव है । कवि रै अनुभव री दुनियां लांबी-चौडी है । बीमं टेड़ा-मेड़ा, वाकाचूका, चिकणा-चपटा, हळका-गैरा, खाटा-मीठा, हाऊ-भूंडा घणाई रंग, तेवर अर चितराम, मंडपोड़ा है । कवि री दीठ गैरी अर व्यापक है । वो व्यक्ति अर समाज, देस अर धरम, कुदरत अर वणावट पर आपरी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करै ।

आज री मिनख सरल अर मीघो कोनी, निरमल अर निरद्वन्द्व कोनी । वो आपरै अस्तित्व खातर लड़ै, बीजां रै अस्तित्व नै चुनौती देवै, संघर्ष-करै । बीरो आपो उलझघोड़ा है, भात-भांत रा तनाव अर दयाव सूं दध्योडो है, घुटन, निराशा अर कुंठा रो अंधारो बीनै निगळै, वो छटपटावै बीरो विराट रूप घिस-घिसार'र 'चिन' मात्र रै जावै । 'बैमीला रिस्ता', 'आत्मा कलम रो सीता', 'परम्परावा', 'आज री मिनख', 'अकासियो', 'आज री घर', 'दू बी ऑर नॉट दू बी', 'कैक्टस अर हूं', 'लाइलाज दरद', 'शापितरक्त बीज', 'रगमंच' आदि कवितावा मिनखाचार रै टोटै अर अमूर्तणै पण री साख भरै ।

परश्व

पण कवि रो मूळ स्वर आपै री पँछाण रो स्वर है । वा परिवेसगत विकृति माथे धाबुकदाई वाग करै नकावपोस सो, मूंडा नै उधाड़ै । मिनखाचारै री वन्दना-मंडल करै । कवि रै 'प्रेम' री दूव हरी भरी है, बीमं मोटी रै बलिदान री गंध है । विखरघोड़ा मिनखां रो 'जुडाव' है । 'अवोली बातां' करण री चाल है, आंसू रै फूल पर मधरी मुळक है ।

कवि प्रयोगधर्मी है । पारम्परिक उपमातां नै जिन्दगी रै यथाथं सूं जोड़ै ।

डॉ० नरेन्द्र भानावत



रंगमंच

बार बार

रंग-रूप बदल र

वेग-भूसा पलट र

भेज दियो जाऊं

टय रंगमंच पर,

जिण रो

अणूनी चमकती रोमण्या मे

सिळमळ टन्दरजाळी अन्धारां मे,

मीठी मस्तानी हंमी मे

नमीली फुगफुमाटां मूं

हुय जाऊं चमगूगो-र

भूल जाऊं-कै

हूँ यूण ह ?

मनं जिण पात्र रो वाम करणो है ?

टण मोर शारा-माय

प्राणटर रो अवाज भी दव जावै-र

आत्र भी

अणवाण अणगो गो

राइयो ह

टण रणमंच पर अर

नाटक रो ममं

नेत्री म

गुत्रली रात्र रो ह ,

आत्मा

हैं

जुगा रें कितारों

बीचाळें बंधनी

बैरुपी नदी हू

सूरज

म्हारे

किरपा रें डोगं मू.

इन्दरधनुस गे कांचळी'र

मावणीं घटावां गे माटणी लहगों

मी-र

फुवारां री मीणी चूदड़ी पर,

बीजळयां री बनार लगावै,

मनें

तारा

नगजडिया कनफूल'र

चान्दो

चन्द्रहार

पैरावै,

वसन्त

म्हारी चोटी सिणगारै

र

उपा रो कूं कूं म्हारी

माग भरै,

भर
गिझा गी मछाई
म्हारै काजळ आंजै
र
नुई बीनणी मी
मजी धजी
हैं

मदा दुआगण
म्हारै लैरां रै हीठां मूं
बिजोग रा गीन गांऊ
र .

भाह्यां मूं
अपबिध्या मोनी
टपराती रैयूं
र

महा मागर मूं
महा मिसण रै घाम्ने हूं
जुगा जुगा मूं

धेवणी रैई हूं
र
वेवणी रैयूं.

जिन्दगाणी र मौत

दियासलाई

जगी

बुझगी,

पलनां

उठी-झपकगी,

हथेळ्यां

मिली-

जुदा हुगी,

वरफ री किरचा

उछळी-

घुळ र पाणी हुगी,

दो पंछी

उड्या-

अळगा हुग्या,

परछाई

वणी-

मिटगी

तार

टकराया-

दूर हुग्या,

बाळू री लकीर

वणी, हँयगी,

ओम री बून्द

वरमी-

सूवगी,

पमा रा निमाण

मड्या-

मिटग्या

पसीनो आयो-

किन्नी,

उड्डी, कटगी

चिणगारी

चमकी-बुझगी.

अकासियो

अन्धारे रँ खम्भे
टम्पो हँ
अकासियो,

रात रँ जँ'र नँ
पीवं हँ
अकामियो,

अमूर्ख री घुटण
घुटे हँ
अकासियो

आन्धी री पीढ़ पी
मुळकं हँ
अकागियो,

राग भर अँरलो
बळं हँ
अकागियो,

दूजां रँ खानर
जगी हँ
अकागियो

अधियारं माधं
उत्राळं री जं
प्रगटे हँ
अकागियो,

दरारे मन माध
मँधकण हँ
अकागियो

कलम रौ सातो

कलम री कुळण
काणी,
कलम रा आसू
कविता,
कलम री घुटण
साहिय,
कलम री जळण
कला,
कलम री चिन्ता
दरसण,
कलम री लोई
इतियास,
कलम री जुवान
भासा.

आज री मिनख

हर आख	हर तन
!	—
हर चेंरो	हर मन
?	{ [()] }
हर होठ	हर पग
()	।
हर कान	हर सुख
;	@
हर हाथ	हर दुख
÷	+
हर साथ	मिनख बस
%	चिन्न ई चिन्न.

बंमोला रिस्ता

लाग जावे

जण

ऊंजळ दातां में

कोई काळो कीडो-

तो मसूडा माय गैराई सूं गडियोडा

दांत भी

हिल जावै-

जड़णं सूं.

होळं होळं

दाडां-दान्त

सहन लागे

भरण लागे,

बिगड जावै मूळ रो स्वाद

समाजावै सांसां मे बास

पण

मोह आन्धो मन,

इण सडियोडा दातां में

आप रं हाया

उखाड़ फेकण रो,

निकलवावण रो

करं नही सा'स-र

जडा छोडिघोडा दांत

मूतां-जागता

खावतां-पीवतां

हंसता-बोलता

दै'ता रं

एक तीखो दरद

एकं गैरी टीस-कै

आदमी छटपटावतो रं.

जुड़ाव

जणै

किणी आँख रा आँसू

म्हारी

आलइल्या माय

घुळ जावँ,

जणै

कई हिरदँ रो दरद

म्हारँ

कालजे री कुळण

वण जावँ,

जणै

कई री हार

म्हारँ

जिनगाणी रँ पगा नँ

यका देवँ,

जणै

कई रो भार

म्हारँ

मन रो भार

वण जावँ-

जणै

किणी रँ मन रो सुख

म्हारँ

होठां री मँन्दिया, मुळक

रच जावँ-

तो हुबँ पतियारो-कँ

अजँ ताई

मिनख-मिनख सू

पूरी तरिया कोनी टूटघो,

कठई न कठई

गैराई मे जुड़ियोडो है .

परम्परावां

जूनी अध्यारी
सकड़ी संकड़ी
कोटड्यां मांय
कंद,

आपा सगळा
सूत्यां हीं
मैली वासती सीरखां सूं
मूंडा ढक 'र,

जिणमे आपां
पुराणी सांसां नै
फैरूं पीवां 'र
छोड् दां,
फैरूं लेवा 'र
पाछी छोड् दां,

कुण जाणै कद
आपां
ए सीरखा-कोटड्यां सू
मुगती पामां ?
कद ताई
ओ जैरीलो
चवकर चालसी ?
कद हुयसी
दिनुगो ?

आज रो घर

आगण

उफतियोडो,

कमरा

अमूजियोडा,

साळ-बरसाळी

राठ सुळगायोडी,

बंठक

मूढो सूजायोडी,

रसोई

सुळगती,

पइन्डो

भभका मारतो

मिन्दर

चित्लाडा मारतो

मेडी

माघो पीटती,

भीता

भो खायोडी

बांडा-बारघा

डरपीजियोडी

घाळा-अलमारया

लुळता

जाळी-क्षरोखा

झुरता,

नाळा-परनाळा
तिस्सा
छता
आसूं टपकावती,

छता-दुछता
मुंढा सियोडा.
भेंवरा-तहखाना
आंसू पियोडा,

घोरी मोडो
बन्द
डागळो
मायो झुकायोडो,

अरतण-बरतण
खडकता
सीरत-पयरणां
झगडता,

अगाडी-पछाडी
सम्बन्ध तोडियोडा
अडोस-पडोस
मूढो फेरियोडा,

गळी
मेण मुम्कली
-चीक
चोफाळिया,

अं है घर रा हाल
आ है जमाने री चाल !

कैवटस र हूँ

सई कँवे

“धणो अपसुगणी हूवं
धर में थोर उगाणो.”

परम्परावां'र आधुनिकता रो
वरणसंकर - हूँ
कैवटस खने सडयो सोचू-
क इणने बार फेकू' क नही ?
क कैवटस ताना देवतो मुळक'र
जुगां सू कांटा सियोड़ी,-
जुवान खोली-

“म्हारा काटा
इत्ता जैरीला कोनी
जित्ता धाणी
रूढयां र परम्परावां रा,

म्हारा पंजा
इत्ता जानलेवणिया तो कोनी
जित्ता धारै अनुसन्धाणा रा

हूँ इत्तो
सरब नासी तो कोनी
जित्तो धारो सम्य जुग रा जुद्ध,

म्हारै हिरदं मे
धिरजा-बैर-हिंसा रो
बो जैर तो को बैवे नी

जिको

हर समै धारी रगां में
वैवे खून वण र,

मनै लाग्यो

चांद मंगळ री ऊंचाया पर,-
उडण वाले
पताळ री गैराया नापण वालो

इत्ता धरमां

इत्ता मिदान्ता

इत्ता अनुसंधानां र

इत्ती सदियां' रै

पगोघिया सूं

मभ्यता रै मिखर पर चढियोड़ो

हं भिनस

इण काटेदार

कैवटम रै मामै

एक बावनियो हूं."

हूँ बी और नोट हूँ बी

परिवेश

एक लाल

एनी आंग

उणमे चिमफं

काळी किरणां याळो

एटमी मूरज,

धरती

छिजती-पिपळती

धोषी-पतळी

बरफ री पडत,

जिण मार्थं

हाथां मे तीती घुरवां-

तलयारां मियां

काटती-भाजती

गंठी सूवा

चकरीबम हुयरी है,

मातावरण

धुलतो-दमघोटूं

मसाण,

जिण मार्थं छायोड़ी है

रेडियोघरमी कळापण,

चौफेर

मृत्यु रा सरणाटा

बम्बा रा धमीडा

भाभा री गरजां-र

लेसर किरणा रा पळका,

सावण-फागण

हर जगा
दारू रो धुवो
आग'र लोई रो समन्दर,
हर मूँढ़े
मीत री धोखा-'र
मानव री हार रो कळमस,

इण रे बिवाळें खडघो
सतुरमुरगी धरमी
बावनियो अरजण-हूँ
सोबू-कें
दू बी और नोट दू बी

सरजणा रो मोल

मीपियां रे मोत्यां रो
मोल तो
मूँत्यो गयो

पण कुण कूत्यो
दुराडो
आं बापही मीप्यां रो ?

लाइलाज दरद

[एक चिट्ठी—जिकी हर हाथ री—हर घर री है]

घर सू आई है चिट्ठी कं
डाइविटिक बापू रो
किणी तरियां भरै नही है घाव कं
सू या भी असर करै नही—
(क्योंकि खरीदण नं पईसा कोनी)

आस्था हुवती जावें कमजोर
चिट्ठी भी लिखी-पढ़ी जावें नही,
बिन पेन्सन वाळी सेवा छूटणें रं बाद
मिळी प्रोविडेंट फंड री रासि सूं
इण अपाहिज हालत मे
जीवण री गाडी गुडकावण नं ई
खोली ही दुकान
उणरो समळो समान
उठग्यो उधार,
कोई भी चुकावण री हालत मे कोनी
र बिना समान री वा दुकान
अब हुयगी बन्द—
र चूल्हो वाळण नं भी कोई
देवें नही दियासळाई उधार,
सो ध्यान रंवे
आगे ममंचार है कं
मां रं गोडा रों वरसा बूढी ट्यूमर
उणनै—उठण कोनी देवें.
सगळा केवें कं
बिना इलाज
मा हुयजासी लूली—पागळी ...
ध्यान सूं वाचीजें
कंवारी वैन वढती जायरी है ताड सी—
र दहेज गी माग वधती जायगी है
वाळ में वधतां मोल ज्यूं
लोग केवें मूढामूढ कं

ए सावँ भी
आ छोरी रँ जासी कंवारी-
आ भाग जासी किणी लुच्चे लफगे रँ लारं
या कर लैसी कुवा-खाड.

एक समंचार ओरुं
छोटोडो भाई हुवतो जा रियो है
आवारा गर्द कै स्कूल जावँ नई”.

चिट्ठी पढ र मनै लागं
जाणै म्हारं मन री गैराई में
कोई तीखी आरी
चीरती चलीगी-मनै.

फेरु बखत री निरदयी बाबा मे
हूँ हवालै कर दूँ खुद नै
पख नुचियोई लोह लहाण पंछी समान-
बयोक

पिताजी रँ गैगरीन रो घाव तो
एक लाम्बै समै सू
रिम रियो है भवाद-म्हारं मन में.

मां रँ गोडां रो दरद
लाग चुक्यो है
म्हारी जवानी रँ पगां मे,
बैन रँ बदन री बघती चांदसी,
छा चुकी है सफेदी बण'र
म्हारे माथं, मूढं र सरीर पर,
भाई री आवारागदीं

घुळ री है रग रग मे
रगत बैसर सरूप
बडते करज, मैगाई र दहेज रो दरद
चटख रियो है

म्हारी रीठ री हड्डी मे-जिको एक्सरं री पकड मे भी
कोनो आवे

हूँ एक लाम्बी-ठंडी सांस छोड़ र हुयजाऊँ चुप
कै

ए सगळा दरद ला-इलाज है.

बिरखा राणी

नीतरपली बादळ्यां री
यंहंगी लहराती
इन्दर धनुस री
रग मुरंगी कांचळी कमाती
झीणी झीणी फूवागं मे
चूनडी उडांती

बीजळियां रं होठां
मीठा गीतलडा गुजाती
सावण-
लोर ऊचाती
फागण-
चंग बजाती

मादळ बादळिया हुलरांती
तेजे री तान उठाती
आकामी गगालहरांती
मावन-रगी
फागण रचंगी

रग जमानी, मदमाती-
आ कामणगारी
बिरखा बीनणी.

भरम

सपनां रा मिरगला
भरता रैया
कुळाचा
रात भर
बालू री लैरा नं
पाणी समझर,
पण
तोड़ नाह्यो
उणा रो दम
दिनूगे री
किरणा री लैरां.

बिजोग

बीत रटि हे
जिन्दगी
उणी भांत
जियां
मांझळ रात नं
आलणे सूं
पछीड़ो,
भटवयोड़ो
डाफा मारतो फिरं
अंध्यारी रात मे.

सपनां रा घरकोलिया

सामलं
चोगान मांय
टावरिया
बणावं
माटी रा घरकोलिया,
पण
कोई काळा
कठोर पग
भांग जावं
आ घरकोलिया नै-
तो
मनं लागं-क
जाणे
इणी तरियां
कोई अणदेख्या पग
माटी मे मिला जावं
म्हारं सपनां रं घरकोलिया नै.
र हूं
डब-डब नैणां सूं
तिहकयोदी माटी सूं
मुठ्या भरतोई रह जाऊं !

शापित रक्तघोज

म्है
स्टेनलेंस स्टील जुग रा ही,
म्हारां गुण निराळा है-
म्है नित
चमकता-चिलकता दियां ,
इण चमक लारें
हर काळें-घोळें नै
लुकाला,

म्है
इसा चीकणा-तिसळणां हीं कें
दाग कें छांट
म्हा पर टिक ई नी सकें,
म्है
हर कळक-भूंड नै
संकर भगवान दाई
मुळकता-हसता
लोक हित मे
पी जावां.

म्है स्टेनलेंस
प्रेसर फूकर दाई हीं-
जिण माय
सो कई पच जावं
लकड़-पत्थर सें
हजम.
म्हारी भूख इसी कें
देखता देखता
बडा-लोठां पुळ डकार जावा
लाम्बी-मोटी सड़का गिटक जावां

डीगा डम्बर भवन निगल जावां
बड़ी-मोटी योजनावां जीम जावां
देग-सीमावां मैं बंध सावां,

म्हारी

तिरग इसी कं
संसद-संविधान नै,

न्याय-धरम नै

प्रान्त-राजा नै

आस्या मोंच

अणछाण्यं पाणी दाई पी जावां-

म्हानै

मित्यो है इसो बरदान कं

जिण मार्यं म्है हाथ राख दां

बो ही स्वाहा-

गेहूं-चीणी स्वाहा

घासलेट-पेट्रोल स्वाहा

गिमट-लोहो स्वाहा

राज-राजनीति स्वाहा

भाग्य-नाटिरय स्वाहा

कला-ब्यापार स्वाहा

सम्यता-संस्कृति स्वाहा

नीति-नैतिकता स्वाहा

मिनख-मानखो स्वाहा

स्वाहा.

म्है

इसा चमत्कारी बिघाता ह्यं कं

काळै नै धोळो

गधे नै घोड़ो

अभिनेता नै नेता

पापी नै धरमी

अप्यानी नै ग्यानी

बणावणों

म्हारे डावें हाथ रो खेळ है

म्है

चुटकी बजा'र
टाटवाळें नै खादी
भगवां नै घोळा
हरा नै लाल
गाभा बदळवा दां-
चावां जणे
भला भला नै
नागां करदां

म्है

अंगूठा दाम नै
महाकवि काळिदाम अर
महारिसी बालमीकि नै
महामूरखानन्द वणां नाखां

म्है

हत्या नै आत्महत्या
आत्महत्या नै खून.
धरम नै सम्प्रदाय
दंगे नै घंघो
जाति नै पाति,
रोट नै बोट
बोट नै नोट बणा दा

म्है

इमा नियामक हां कं
बोलदां बो कानून है
करदां बो कायदो है
म्है चावा उणानै
नचा नाखां
नाकां चिणां चबा नाखां,
म्है हां रक्त बीज !
जठं म्हारें मूक री लाळ पड़ जाय
काळा बजारी-तस्करी

घोरी, डकैती, हत्या
अन्याय-अत्याचार
नुषां नुषां रक्तबीज जीवनघा
दिन दूषां रात शीघणां
बधता जातां कं
म्है दण देग नै
रक्त बीज देस बणा'र ही दम लेयां

म्है
स्टेनलैस जुग रा ही,
म्हारां गुण निराळा है,
पण
मराप एक भोगा हां क
म्हारे मूढे जडियोडा ताळा है.

• • •



- नाम** : लक्ष्मीनारायण रंगा
- शिक्षा** : एम. ए. हिन्दी
- रंगमंच** : लेखन-निर्देशन, मंचन अरु अभिनय री 25 वरसा री अनुभव/अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत ।
- आकाशवाणी** सन् 1960 सू हिन्दी अरु राजस्थानी नाटका, कवितावा, कहाणिया अरु वार्ताआ री लगातार प्रसारण ।
- लेखन** : हिन्दी अरु राजस्थानी री 15 पोथ्या प्रकाशन/अखिल भारतीय स्तर री अरु अन्य प्राता री पत्र-पत्रिकावा मे कवितावा अरु एकाकियो री प्रकाशन । प्रान्तीय स्तर पर पुरस्कृत ।
- संगठन** : 1. बीकानेर युवक समारोह री आयोजन
2. बाल-नाट्य-समारोह री जयपुर मे श्री गणेश ।
- सांस्कृतिक** : 1. लोकसंगीत, लोकनृत्य अरु नाटका माय विश्वविद्यालय युवक समारोह मे प्रतिनिधित्व
2. अखिल भारतीय सांस्कृतिक समारोहा मे भागीदारी
3. शिक्षा री पाठ्यक्रम मे रचनावा संकलित